ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.2, JULY-DEC,2023 /85

''एकात्ममानववाद एवं राष्ट्रीय राजनीति''

प्रवीण कुमार तिवारी एवं डॉ0 अभय सिंह
शोध छात्र – राजनीति विज्ञान एवं शोध निर्देशक – सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान,
डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।
https://doi.org/10.61410/had.v18i2.149

शोध सारांश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक राजनीतिज्ञ के साथ–साथ महान दार्शनिक, अर्थशास्त्री एवं समाज सेवी भी थे, पं0 दीनदयाल उपाध्याय का पारिवारिक जीवन तो अत्यन्त कठिनाईयों में व्यतीत हुआ। शिक्षा पूर्ण करने के साथ ही वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सिपाही के रूप में जुड़े और संघ प्रचारक के रूप में अपनी ख्याति अर्जित की। वह पांञ्चजन्य में पत्रकार की भूमिका में लेखन कार्य किया, पं0जी एकात्म मानववाद की कल्पना मार्क्सवाद एवं पश्चिमी पूँजीवाद व्यक्तिवाद के विरोध स्वरूप उत्पन्न हुआ। उन्होंने कभी भी आधुनिक तकनीकि या विज्ञान का विरोध नहीं किया, उनका विचार पूँजीवाद एवं समाजवाद के समन्वय द्वारा प्राप्त गुणों के तो प्रशंसक थे, किन्तु इन दोनों ही प्रणालियों में अलगाव जैसे सिद्धान्त के कभी भी पोषक नहीं थे। वह हमेशा वर्गहीन, जातिहीन, एवं संघर्ष मुक्त सामाजिक व्यवस्था के पक्षधर रहे, उनके एकात्मवादी दर्शन से यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित भी होता है।

शब्द संकेत :– एकात्मकवाद, सहिष्णुता, वैशिष्ट्य, भौतिकवाद, समाजवाद, पूँजीवाद, अस्तित्व, साधन एवं साध्य, स्वेच्छाचारी, स्वयंभूसत्ता।

शोध–पत्र

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अखण्ड भारत के स्वप्न को साकार रूप प्रदान करने हेतु भारतीय जनमानस में एकात्म मानववाद के दर्शन को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तक स्थापित करने का प्रयास किया था। पंडित दीन दयाल उपाध्याय व्यक्ति को ब्रहमाण्ड के साथ श्रंखलाबद्ध करते हुए यह स्पष्ट करते है कि इस जगत में व्यक्ति का अस्तित्व एक–दूसरे से जुड़ा हुआ है। इसलिए जीवन के प्रति किसी भी प्रकार का संघर्ष नहीं है। उनका विचार था कि भारत भूमि में वसुधैव कुटुम्ब, विश्व बन्धुत्व एवं सहिष्णुता की भावना सम्पूर्ण रूप से समाहित है, किन्तु पश्चिमी सभ्यता एवं जीवन शैली में कहीं न कही असहिष्णुता का कोई अंत नहीं दिखाई पड़ता है।, पं0 दीन दयाल उपाध्याय का कथन है कि पश्चिमी समाज में अन्य समाज के लोगों के प्रति सम्मान और श्रद्ध का भाव कभी भी नहीं उत्पन्न हो सकता है। क्योंकि वह साम्राज्यवादी दर्शन से ही सम्पूर्ण मानवता पर अपना आधिपत्य रखना चाहते है।[1]

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति में अवसरवादिता के बढ़ते प्रभाव को स्वीकार करते हुए कहते हैं, कि राष्ट्र का मार्गदर्शन करने वाले तथा राजनीति के क्षेत्र में कार्य करने वाले अधिकांश लोग इस बात से अवश्य ही उदासीन प्रतीत होते हैं। जिसका परिणाम भारत की राजनीति अवसरवादी एवं सिद्धान्तहीन व्यक्तियों का अखाड़ा बनती जा रही है। राजनीतिक दल एवं राजनीतिज्ञों का किसी प्रकार न तो सिद्धान्त बचा है और न ही आदर्श तथा न कोई आचार संहिता जिसके बन्धन में रहकर वह सत्य के मार्ग पर अग्रसर हो सके। आज के परिवेश में राजनीति करने वाले लोग स्वहित को देखकर सत्ता लालच में कभी भी दल बदल कर लेते हैं। ऐसा करने में उन्हें किसी भी प्रकार का संकोच नहीं होता है।

भारतीय राजनीति में कभी अगर किसी दल का विघटन या उसकी समाप्ति होती है तो उसके मूल में किसी तात्विक मतभेद अथवा समानता के आधार पर नहीं बल्कि चुनाव अथवा मंत्रिपद ही प्रमुख रूप से होता है।[2] किन्तु इस प्रकार की परम्परा पूर्व के समय में नहीं थी। जैसा आज के परिवेश में जाना जाता है। नार्मन डी0 थामर ने कहा है कि ''दीन दयाल उपाध्याय जिस वर्ग से सम्बन्धित है, वस्तुतः वर्तमान विश्व में राजनीतिक चिंतन के कारण उनसे अग्र श्रेष्ठता वाले राजनेता थोड़े ही होंगे। मौलिक राजनीतिक चिंतक के नाते उनकी पहचान का क्रमशः विस्तार हो रहा था। भारत के एक बड़े राजनीतिक दल में उनकी सक्रिय भूमिका के साथ–साथ वह वैशिष्ट्य था, जिसने मुझे प्रथमतः उनकी ओर आकृष्ठ किया।''[3]

भारतीय राजनीतिक दलों एवं उसके प्रवर्तकों की सर्वाधिक बड़ी भूल यह रही है कि वह भारत के विभिन्न वर्गों के अस्तित्व को स्वतत्र मानते हैं। इस अस्तित्व को स्वीकार करने के पश्चात् पुनः इस बात का प्रयास करते हैं कि यह अस्तित्व किसी प्रकार राष्ट्र के हितार्थ काम आये, इसीलिए आज तक का उनका सम्पूर्ण प्रयास विभिन्न स्वतंत्र इकाईयों के बीच एक एवं समन्वय स्थापित करने का ही रहा है। उनमें महत्वपूर्ण विभाजनकारी को ढूढ़ने का प्रयास किया है किन्तु संख्या में वह रूढ़ होने के कारण ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो इसे सुलझा सके, किसी भी वर्ग के अस्तित्व को जो वास्तविकता से परे है, संकट न पहुँचाते हुए बल्कि उनका संवर्द्धन करते हुए आज तक राजनीतिक प्रश्न का उत्तर ढूढ़ने का प्रयास किया जा रहा है जिसका परिणाम विफलता ही है।[4]

जहां तक भारत के राजनैतिक दलों का आशय है। उसमें अभी भी बहुत सी त्रुटियाँ हैं। उनमें भी सर्वाधिक समस्या सत्तारूढ़ दलों में है, यह भी सत्य है कि अन्य राजनैतिक दलों की प्रस्थिति भी कुछ बहुत अच्छी नहीं है। आज के आधुनिक भौतिकवादी परिवेश में राजनैतिक दलों की प्रस्थिति सैद्धान्ति रूप से भी सही नहीं है। बल्कि व्यक्तिगत या गुट आधारित दल गठित होने लगे हैं। इसी संदर्भ में डॉ0 राधाकृष्णन ने कहा था कि ''राजनीति अन्ततः साध्य तक पहुँचने का एक साधन मात्र है। यह एक ऐसी व्यवस्था का निरूपण करती है, जिसके द्वारा सभी को सामाजिक एवं आर्थिक न्याय प्राप्त हो।'' राजनीति अब साधन नहीं बल्कि साध्य हो चुकी है। आज की परिस्थिति में आज भी हमारे बीच ऐसे लोग मौजूद है जो निश्चित रूप से सामाजिक एवं राष्ट्रीय दोनों ही उद्देश्यों की पूर्ति हेतु राजनीतिक सत्ता पर दृष्टि देने की अपेक्षा मात्र सत्ता प्राप्ति हेतु अधिक व्यस्त प्रतीत होते हैं।[5]

एकात्म राज्य के सन्दर्भ में पं0 दीन दयाल उपाध्याय का कथन है कि ''एकात्म राज्य का आशय सम्पूर्ण शक्ति या अधिकारों का केन्द्रीयकरण नहीं है। जिस प्रकार परिवार में मुखिया का होता है, सम्पूर्ण कागजात उसके नाम पर ही चलता है। परन्तु सम्पूर्ण शक्ति मुखिया के पास नहीं होती। शक्ति तो अन्य लोगों के पास रहती है। एकात्म राज्य का आशय अत्यन्त स्वेच्छाचारी राज्य नहीं है और इसका अर्थ यह है कि प्रान्त को समाप्त कर दिये जाँय, प्रान्तों को अधिकार मिल सकता है और रहेगा, बल्कि राज्य के नीचे जो भी अन्य संस्थाऐं है यथा जनपद है, उसे भी अधिकार प्राप्त होगें। ठीक इसी प्रकार पंचायतों का स्थान हमारे संविधान में नहीं है। पंचायतों की अपनी कोई सत्ता नहीं है, उन्हें मात्र प्रदत्त सत्ता के कारण एवं राज्य सरकारों की कृपा से प्राप्त होती है। आवश्यकता है कि उनकी स्वयं भू सत्ता स्वीकार की जानी चाहिए। अर्थात् सत्ता का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए। जिससे शक्ति को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाया जा सके। शक्ति में भी बंटवारा होगा, किन्तु इन सभी को एक केन्द्र के कारण हमारा एकात्मक राज्य होगा जो धर्म के अनुसार कहा जा सकता है।[6] वर्तमान प्रस्थिति में पंचायतें अब अपने अस्तित्व को प्राप्त कर चुकी है।

अनुसंधान का उद्देश्य :–

अनुसंधान का ज्ञान के साथ एक अजनबी मुलाकात है, जो क्रमबद्ध रूप से वैज्ञानिक प्रक्रिया के साथ तैयार की जाती है, इस प्रक्रिया को पूर्ण रूप से सम्पन्न करने हेतु कुछ उद्देश्यों का निर्माण किया गया है जो निम्नवत् है :–

1. वर्तमान भारत सहित सम्पूर्ण विश्व विकास के उदारवादी और समाजवादी प्रतिमानों के मध्य विभ्रम की स्थिति में है, ऐसे में दीन दयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद को विकास के माडल के रूप में अपनाने की सम्भावना का विश्लेषण करना इस शोधकार्य का प्राथमिक उद्देश्य है।
2. तृतीय विश्व युद्ध के मुहाने पर खड़े इस विश्व में मानव–मानव के मध्य सौहार्द और समन्वय की भावना, के विस्तार में एकात्म मानववाद की धारणा की उपयोगिता को जाचँना भी इस शोध कार्य का उद्देश्य है।
3. अर्थ संग्रह की बढ़ती प्रवृत्ति मानव को मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और अन्ततः धार्मिक आदि सभी रूपों को क्षरित कर रही है। इन सभी क्षेत्रों में मानव के उन्नयन हेतु दीन दयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद के मन्त्र की पुष्टि प्रदान करना भी प्रस्तुत शोध का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।
4. लोकतंत्र का चतुर्थ स्तम्भ पत्रकारिता में निरन्तर क्षरण की प्रवृत्ति देखी जा रही है, ऐसी परिस्थितियों में दीन दयाल जी के पत्रकारीय आदर्शो की पुर्नस्थापना की सम्भावनाओं का अन्वेषण करना भी उपरोक्त शोध प्रकरण का एक प्रमुख उद्देश्य है।

अध्ययन की परिकल्पना –

प्रस्तुत शोध प्रकरण इस परिकल्पना पर आधारित है कि क्या दीन दयाल उपाध्याय जी द्वारा प्रतिपादित एकात्मक मानववाद की अवधारणा पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों का एक सशक्त विकल्प है ? क्या इस अवधारणा से राष्ट्रीय जीवन के राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आदि विधिक पक्षों के मूल्यों की पुनर्स्थापना सम्भव है ? क्या एकात्म मानववाद वास्तव में मानव कल्याण का एकात्मक मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

निष्कर्ष –

पंडित दीन दयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद की परिकल्पना उनका केन्द्रीय विचार है। वह एकात्म मानव दर्शन में सम्पूर्ण श्रृष्टि को देखते है। उनका कथन है कि मनुष्य में एक परिवार, परिवार का विकसित रूप समाज है, राष्ट्र है, तत्पश्चात् सृष्टि है, परमेष्टि है, इसलिए पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी के इस तत्व दर्शन को एकात्ममानववाद कहना ही समीचीन प्रतीत होता है। समाजवाद, पूँजी वाद तथा साम्यवाद जैसे अनेक वादों के बीच पंडित जी का एकात्म मानव दर्शन इस देश में दीप ज्योति बनकर हमारे समक्ष है, किन्तु इस दर्शन के अनुरूप राजनीतिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने हेतु अपने विचारों के पोषक समर्थकों एवं विरोधियों के मध्य इस विचार को प्रस्तुत करने की नियति द्वारा इसे एकात्म मानववाद कहा गया है, हो सकता है यह उनकी कल्पना मात्र. रही होगी कि 'एकात्म मानववाद' के नाम से भारत के विद्वान जब इसकी गहराई से विचार करेंगे, तो उन्हें एकात्म मानववाद के दर्शन स्वतः ही हो जायेगें।

एकात्म मानववाद का उद्देश्य समाज एवं व्यक्ति की समस्त आवश्यकताओं को व्यवस्थित करते हुए प्रत्येक व्यक्ति को गरिमामयी जीवन निवर्हन को सुनिश्चित करना है। यह प्रकृति द्वारा प्रदान किये गये संसाधनों के उचित उपयोग का समर्थन करता है। जिससे इन संसाधनों की आपूर्ति पुनः सम्भव हो सके। वैश्विक स्तर पर बड़ी संख्या में गरीबी रेखा के जीवन यापन करने वाले परिवारों की संख्या प्रति दिन बढ़ रही है। दुनिया में विकास के नाम पर अनेकों

मण्डल उपलब्ध है लेकिन अनुशासन के अनुरूप परिणाम नहीं प्राप्त हो सका है। एकात्म मानववाद एक ऐसा दर्शन है जो अपनी प्रकृति के अनुरूप संधारणीय है। एकात्ममानववाद मात्र राजनीतिक ही नहीं बल्कि सामाजिक, आर्थिक लोकतंत्र एवं स्वतंत्रता में वृद्धि करता है।

संदर्भ–सूची

1. राजकुमार भारद्वाज (सं0) दीन दयाल उपाध्याय रचना–संचयन, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स (प्रा0) लिमिटेड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ0–16।
2. उपाध्याय, दीन दयाल : एकात्म मानववाद, तत्व मीमांसा–सिद्धान्त विवेचन प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ0–71
3. शर्मा, महेश चन्द्र : आधुनिक भारत के निर्माता पं0दीन दयाल उपाध्याय, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृ0–109
4. राजकुमार भारद्वाज (सं0) दीन दयाल उपाध्याय रचना–संचयन, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स (प्रा0) लिमिटेड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ0–54
5. वही, पृ0–400
6. उपाध्याय, दीन दयाल : एकात्म मानववाद, तत्व मीमांसा–सिद्धान्त विवेचन प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ0–109